P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VIII April-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

भारत में भ्रष्टाचार के बदलते स्वरूप

अमित शुक्ल
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह
महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश

भारत में भ्रष्टाचार की कहानी अत्यन्त लम्बी है, विगत वर्षो से नित्य नये–नये घोटाले सामने एक–एक करके आते जा रहे हैं, जिनसे भारतीय जनमानस विचलित है, पर आश्चर्य यह है कि यह चिंता सिर्फ राजनीतिक दायरे से बाहर ही दृष्टिगत होती है, और वहीं से यह मांग उठती है कि भ्रष्टाचार से निपटने के लिए कारगर व्यवस्था की जाए। देखा जाए तो सरकारी स्तरों पर भ्रष्टाचार की लड़ाई महज भाषणों, और कागजी कार्यवाई तक सीमित है। आज दशा यह है कि पूरे भारत में 20 लाख से अधिक आवेदन सूचना का अधिकार के तहत भ्रष्टाचार के मामलों पर सरकारी कार्यालयों में डाले जा चुके हैं, जिसका कोई समाधान नहीं है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई प्रत्येक व्यक्ति को सबसे पहले अपने घर में लड़नी चाहिए, यह तभी संभव है जब भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए सभी, एकजुट तरीक से आगे आऐं और भारतीय जनमानस में एकजुटता जिस दिन हुई तब अवश्य ही सोने की चिड़िया के नाम से पहचाना जाने वाला यह भारत भ्रष्टाचार से मुक्त एक ऐसा भारत होगा जिसके विकास की गति दुनिया के अन्य देशों के विकास की गति से चार गुना बढ़ जाएगी तब यह विश्वपटल पर प्रथम महाशक्तिशाली भारत के रूप में पहचाना जाएगा।

मुख्य शब्द : भ्रष्टाचार, भारत, जनमानस, राजनीति, सोने की चिड़िया, महाशक्तिशाली, 21वीं सदी,

परिचय

अगर राजनीतिक क्षेत्र में दृष्टिगत हों तो भारत में चुनाव के क्या तरीके है? पिता के लिए शराब, माँ के लिए कपड़े और बच्चे के लिए भोजन आखिर इस देश में क्या भ्रष्ट नहीं है। भारत का केन्द्रीय व्यसन या दोष भ्रष्टाचार है, भ्रष्टाचार की केन्द्रीय धुरी है चुनावी भ्रष्टाचार और चुनावी भ्रष्टचार की केन्द्रीय धुरी है कारोबारी घराने। भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात ही राजनीति से पनप रहे भ्रष्टाचार से व्यथित होकर महात्मा गाँधी जी ने कहा था कि भ्रष्ट राजनीतिक दलों को ससम्मान दफना देना चाहिए पर वैसा 21 वों सदी के दूसरे दशक मे भी न हो पाया, बीते समय का वही भ्रष्टाचार कैंसर रूपी नासूर बनकर सम्पूर्ण राजनीतिक क्षितिज को अपने आगोश में ले चुका है और अब वह समाज के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त है। वर्तमान भारत में 2 जी स्पेक्ट्रम कामनवेल्थ, आदर्श हाउसिंग सोसाइटी आर कर्नाटक सहित कुछ अन्य राज्यों की खदानों से जुड़े घोटालों नीरा राडिया के फोन की रिकार्डिंग व विकीलीक्स के खुलासे के बाद नित्य नये घोटालों से प्रत्येक भारतवासी अपने को ठगा सा महसूस कर रहे हैं, आज पूरा भारत भ्रष्टाचार और कालेधन के प्रचलन से त्रस्त है। भ्रष्टाचार की सुनामी ने भारत के संपूर्ण राष्ट्रीय चरित्र को अपने आगोश में ले लिया है। सर्वव्यापी भ्रष्टाचार एक लाइलाज राजरोग होता जा रहा है सार्वजनिक जीवन मे भ्रष्टाचार से आम आदमी हतप्रभ चकित और क्षुब्ध है। विकास और निर्माण की हर परियोजना को भ्रष्टाचार का दैत्य निगलने को तैयार बैठा है। सारा प्रशासनिक तंत्र फिक्सरों और बिचौलियों की गिरफ्त मे है भ्रष्टाचार को लेकर सरकार का रवैया अत्यंत चिन्ताजनक है। विश्व पटल पर भारत 'अतुल्य भारत' के रूप में जाना जाने लगा है, नित्य नये भ्रष्टाचार के मामले उजागर होने के कारण भ्रष्टाचार व्यक्ति या संस्था तक सीमित न रहकर अखिल भारतीय स्वरूप हासिल कर चुका है।

देखा जाए तो सरकारी स्तरों पर भ्रष्टाचार की लड़ाई महज भाषणों, और कागजी कार्यवाई तक सीमित है। आज दशा यह है कि पूरे भारत में 20 लाख से अधिक आवेदन सूचना का अधिकार के तहत भ्रष्टाचार के मामलों पर सरकारी कार्यालयों में डाले जा चुके हैं, जिसका कोई समाधान नहीं है। जनसाधारण का गुस्सा भ्रष्टाचार के खिलाफ वर्तमान समय के भारत में नैतिक–अनैतिक सही–गलत उचित–अनुचित की तमाम विभाजन रेखाएँ, मिट चुकी हैं।

भारत की पहली महिला आई.पी.एस. अधिकारी किरण बेदी का कहना है कि भारत को भ्रष्टाचार के कारण हर साल 16 अरब डालर (करीब 720 अरब रुपये) का नुकासान होता है। शिकागो काउसिंल द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में किरण बेदी ने कहा यदि किसी काम के लिए 100 रुपये दिये जाते है तो उसमें स 16 रुपये ही इस्तेमाल किये जाते है 84 रुपये भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाते हैं। भारत को तरक्की पर किरण बेदी ने कहा यदि भारत भ्रष्टाचार मुक्त हो जाए तो यह दुनिया का सबसे विकसित देश बन सकता है उन्होंने जोर देकर कहा कि सभी भारतीय भ्रष्टाचार के खिलाफ मिलकर आवाज उठाएँ कि यह भारत के भविष्य का सवाल है।

इस प्रकार किरण बेदी का उपर्युक्त कथन शत प्रतिशत सही है, क्योंकि भ्रष्टाचार की जड़े जब तक नहीं उखाड़ दी जाएंगी तब तक न तो भारत का भविष्य सुरक्षित है और न ही उसका भाग्योदय। क्योंकि वर्तमान समय के भारत का भ्रष्टाचार ने रोजगार के क्षेत्र में अपनी घुसपैठ कर ली है, पी. एम. टी., पी. ई. टी., पी. एस. सी. रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों में दखल हैं प्रश्न–पत्र बेचने वाले अंतर्राज्यीय रैकेट का पर्दाफाश होता रहता है। कुछ समय पूर्व छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में पी. एम. टी. के प्रश्न पत्र बचने वाले गिरोह का पता लगा था इस रैकेट का मास्टर माइन्ड पटना का डाक्टर चन्द्रमणि कुमार सहाय है जो रायपुर में डेंटल और बिलासपुर मेडिकल कॉलेज के छात्रों के साथ मिलकर यहाँ के परीक्षार्थियों को पर्चे बेच रहा था इसके लिए छात्रों से 13–13 लाख रुपये तक में सौदा तय हुआ था। यहाँ की डी. बी. स्टार टीम के एक परीक्षार्थी की सूचना पर जब इसकी पड़ताल की गई तो बिलासपुर के समीप तख्तपुर में अग्रसेन भवन में पी.एम.टी. के 72 परीक्षार्थी 47 लड़के और 25 लड़कियाँ अपने परिजन के साथ मिलें। इस प्रकार रोजगार के क्षेत्र मे व्याप्त भ्रष्टाचार से भारत के युवाओं का भविष्य किस ओर जा रहा है यह एक चिंतनीय सवाल है? भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात वर्तमान समय तक के दौर मे एक दृष्टि घुमायें तो नज़र आता है कि आजादी के तत्काल बाद से ही भारत में घोटाले होने लगे थे। पहले लघु घोटाले हुये, फिर मझोले किस्म के। इन दोनों को भी हमारे हुक्मरानों ने जब नजर अंदाज करना जारी रखा तो बड़े–बड़े घोटाले होने लगे। जब घोटालेबाजों को नसीहत देन वाली सजा नहीं मिली तो अब 2 जी स्पेक्ट्रम, आदर्श सोसायटी और इसरो जैसे महा घोटाले होने लगे हैं। जब पानी सिर से ऊपर जाने लगा तो नागरिक समाज ने पहल की और अन्ना हजारे को अनशन पर बैठना पड़ा।

अब अनुभवी लोग यह कह रहे हैं कि अन्ना जैसे लोगों की पहल के बावजूद यदि ये घोटाले नहीं रूके तो ये इस देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था की ऐसी स्थायी क्षति पहुंचायेंग कि उसकी मरम्मत भी असंभव हो जायेगी। अन्ना के अनशन के बाद इस देश के प्रभु वर्ग की जैसी प्रतिक्रियाएँ आ रही हैं, वे कोई उम्मीद पैदा नहीं करती। यहाँ उस प्रभु वर्ग की बात की जा रही है जिन्हें घोटालों ने मालामाल किया है।

आजादी के तत्काल बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि काला बाजारियों को नजदीक के लैंप पोस्ट से लटका दिया जाना चाहिए। लेकिन कालाबाजारी कौन कहे, चर्चित जीप स्कैंडल में जिन वीके कृष्ण मेनन का नाम आया, उन्हें कुछ ही साल बाद इनाम के तौर पर रक्षा मंत्री बना दिया गया। दूसरी ओर बिहार में आजादी के तत्काल बाद बनी राज्य सरकार के एक मंत्री को महात्मा गांधी ने हटा देने की सलाह दी थी। लेकिन तब के मुख्यमंत्री ने साफ–साफ कह दिया कि उन्हें हटाने के बदले मैं खुद मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दूंगा। बाद में उसी मंत्री को कांग्रेस ने बिहार का मुख्यमंत्री बना दिया। उस मुख्यमंत्री का शासनकाल तब तक का सबसे भ्रष्ट शासन था।

ये तो शुरूआती बातें हैं। पूत के पांव पालने में ही नजर आने लगे। भ्रष्टाचारियों का मनोबल दिनोंदिन बढ़ता गया। जाति और पैसे के आधार पर भ्रष्ट लोग भी चुनाव जीतते गये। शासन में भ्रष्टाचार बढ़ता गया। दरअसल आजादी के बादसे ही हमार हुक्मरानों ने भ्रष्टाचार के प्रति जो नरम या फिर संलिप्तता वाला रवैया अपनाया, उससे यह बीमारी इस गरीब भारत के लिए आज कैंसर साबित हो रही है। विकास योजनाओं और कल्याण के पैसों में से अधिकांश भ्रष्ट तत्व लूट ले रहे हैं। इससे गरीबों की गरीबी दूर नहीं हो पा रही है। आज भारत में 84 करोड़ लोगों को रोज की औसत आय मात्र बीस रुपये हैं। दूसरी ओर कुछ लोग भारत को लूट कर अरबपति बनते जा रहे हैं। यह विषमता भारत में लोकतंत्र के जारी रहने मे बाधक बन सकती है, ऐसी आंशका जाहिर की जा रही है।

21 वीं सदी में वर्तमान समय के चर्चित प्रमुख घोटाले

एस बैंड आवंटन

इसरो और देवास मल्टीमीडिया के बीच एस–बैंड करार को लेकर घपले की बात आयी तो सरकार को मजबूरन समझौता रद्द करने का फैसला लेना पड़ा। दरअसल इसरो ने जनवरी 2005 में ही दवास के साथ समझौता किया था, लेकिन मई 2005 तक इसकी जानकारी न तो केंद्रीय कैबिनेट को दी गयी थी और न ही अंतरिक्ष आयोग को। मुख्य महालेखाकार ने इस सौदे पर शक जाहिक करती रिपोर्ट संसद को सौंपी, तो मीडिया ने इसे घोटाले के रूप में आम लोगों तक पहुचाया। मई 2005 में केंद्रीय कैबिनेट को इसरो ने सूचित किया कि एस बैंड स्पेक्ट्रम को लेकर एक सर्विस प्रोवाइडर उनके संज्ञान में है, जबकि हकीकत यह थी कि चार महीने पहले ही इसरो की कारोबारी इकाई एंट्रिक्स और देवास–मल्टीमीडिया के बीच समझौता हो चुका था। चूंकि एट्रिक्स ने बिना नीलामी के ही देवा को 600 करोड़ रुपये में बीस वर्षें तक 70 मेगाहट्र्स एस बैंड स्पेक्ट्रम के इस्तेमाल की इजाजत दे दी थी, इसलिए शक लाजिमी था। अगर इसी स्पेक्ट्रम को टेंडर निकाल कर आवंटित किया जाता तो देश को करीब दो लाख करोड़ रुपये का फायदा हाता। यही वजह है कि इसे दो लाख का घोटाला करार दिया गया। वैसे सरकार ने इसे रद्द करने का फैसला तो ले लिया, लेकिन इस अंधेरगर्दी ने प्रधानमंत्री कार्यालय तक को शर्मसार कर दिया।

आदर्श हाउसिंग

मुंबई के अमीर इलाके कोलाबा में सन् 2003 में आदर्श सोसाइटी की 31 मंजिला इमारत बनने से पहले करीब 60 साल तक 6490 वर्ग मीटर के प्लॉट पर सेना का कब्जा था। इमारत का निर्माण 1999 के कारगिल युद्ध के शहीदों की विधवाओं और परिवारों को आवासीय इकाई देने के वादे के साथ शुरू हुआ था। लेकिन बाद में ये फ्लैट प्रभावशाली व्यक्तियों को आवंटित किये गये। सेना की इस जमीन पर पहले कारगिल के शहीदों के लिए छह मंजिला इमारत में फ्लैट बनाने की बात हुई थी। लेकिन फौजियों, नेताओं और अफसरों की मिलीभगत से इस इमारत को 31 मंजिला बना दिया गया। शहीदों के परिजनों को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से निर्मित इस इमारत में नेताओं–अफसरों ने भी हिस्सा बांट लिया। इन फ्लैटों की बाजार में कीमत 8.5 करोड़ है। चूंकि ये जमीन शहीदों के घरवालों को दी गयी थी, इसलिए इसके दाम 65 से 85 लाख रुपये तय किये गये थे। फ्लैट पाने वालों में महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चाव्हाण की सास, साली, साले और एक अन्य रिश्तेदार के नाम शामिल थे हालांकि बाद में उन्होंने फ्लैट वापस कर दिये। इस मामले के खुलासे के बाद चाव्हाण को इस्तीफा देना पड़ा और अब उनके खिलाफ मुकदमा चल रहा है।

2–जी स्पेक्ट्रम

मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनियों को काफी कम कीमत पर 2–जी स्पेक्ट्रम आवंटित करने के खेल में केंद्र की यूपीए सरकार की सबसे ज्यादा फजीहत हुई है। इसे करीब 1.77 लाख करोड़ का घपला माना जाता है, जिसके मुख्य आरोपी पूर्व संचार मंत्री ए राजा हैं। उनकी गिरफ्तारी के पश्चात केंद्र सरकार ने विपक्ष के भारी दबाव में संयुक्त संसदीय समिति से मामले की जांच की घोषणा भी की। कई मोबाइल कपंनियों को काफी कम दरों पर स्पेक्ट्रम आवंटन के इस खेल में राजेनता, अधिकारी, कॉरपोरेट दलाल समेत कई प्रभावशाली लोग शामिल थे। पूरे खेल में मुख्य भूमिका पूर्व दूरसंचार मंत्री ए राजा की मानी गयी। उनके अलावा पूर्व टेलीकॉम सचिव सिद्धार्थ बेहुरा और ए राजा के सचिव रहे आरके चंदोलिया की भूमिका भी संदिग्ध रही।

आवास ऋण

विगत वर्ष सीबीआई द्वारा पर्दाफाश किये गये गृह ऋण यानी हाउसिंग लोन घोटाले की भी खूब चर्चा हुइ। इस घोटाले के आरोप में एलआइसी हाउसिंग फायनेंस के सीइओ रामचंद्रन नायर के अलावा विभिन्न बैंकों और वित्तीय संस्थाओं के कई अधिकारी गिरफ्तार किये गये गिरफ्तार हुए अधिकारियों में एलआइसी में सचिव (निवेश) नरेश के चोपड़ा, बैंक ऑफ इंडिया के जनरल मैनेजर आरएल तायल, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया डायरेक्टर मनिंदर सिंह जौहर, पंजाब नेशनल बैंक के डीजीएम वैंकोबा गुजाल और मनी अफेयर्स के सीएमडी राजेश शर्मा शामिल हैं। यह घोटाला रिश्वत लेकर करोड़ों रुपये का कर्ज स्वीकृत करने से संबंधित था। अधिकारियों ने जिन कंपनियों को कॉरपोरेट लोन देकर फायदा पहुँचाया, उनमें लवासा कॉरपोरेशन, ऑबेरॉय रिएलिटी, आशापुरा माइनकैम, सुजलोन इनर्जी लिमिटेड, डीबी रिएलिटी, एम्मार एमजीएफ, कुमार डेवपर्स आदि शामिल हैं।

राष्ट्रमंडल खेल

यह घोटाला भी विगत वर्ष ही उजागर हुआ। भारतीय ओलंपिक एसोसिएशन ने 2003 में जब राष्ट्रमंडल खेल के आयोजन का अधिकार हासिल किया था, तक ऐसोसिएशन ने 1620 करोड़ रुपये के बजट का अंदाजा लगाया था। लेकिन 2010 तक आते–जाते यह बजट करीब 11,500 करोड़ तक पहुंच गया। इसमें दिल्ली के विकास और सौंदर्याकरण का बजट शामिल नहीं है। जानकार मानते हैं कि इस खेल के आयोजन और इससे जुड़े सौंदर्यीकरण पर करीब 70 हजार करोड़ रुपये खर्च हुए हालांकि आरोपों से इतर अभी तक खेल आयोजन में घपले से उगाही गयी कुल राशि की आधिकारिक जानकारी किसी के पास नहीं है। मामले की जांच चल रही है लेकिन हैरत में डालने वाली बात यह है कि इस आयोजन के मुखिया रहे सुरेश कलमाड़ी को पद से बर्खास्त तो कर दिया है, लेकिन जांच एजेंसी सीबीआइ उन्हें गिरफ्तार नहीं कर रही है। उनके कई करीबी गिरफ्तार हो चुके हैं। इनमें आयोजन समिति के पूर्व संयुक्त निदेशक जनरल टीएस दरबारी और उप निदेशक जनरल संजय महेंद्रू भी शामिल हैं। सीबीआइ ने दिल्ली हाइकोर्ट में चार्जशीट दाखिल करने में देरी कर दी, जिसके चलते गिरफ्तार अधिकारियों को जमानत मिल गयी।

कर्नाटक खनन

विगत वर्ष कर्नाटक में लौह अयस्क के अवैध खनन से संबंधित घोटाले को लेकर सत्ता और विपक्ष के बीच जबर्दस्त धमासान मचा रहा। बेल्लारी के कुख्यात रेड्डी बंधु (जी जर्नादन रेड्डी और जी करुणाकर रेड्डी) और मंत्री बी श्रीरामुलु पर लॉह अयस्क के अवैध व्यापार से 60, हजार करोड़ रुपये कमाने का आरोप लगा, जिसका बचाव करने में कर्नाटक सरकार ने कोई कसर नहीं छोड़ी। इस घोटाले का खुलासा तब हुआ, जब कर्नाटक के लोकायुक्त संतोष हेगड़े ने कई महीनों तक इन दोनों भाइयों के खिलाफ जांच की और पाया कि बिलिकेरे बंदरगाह से 35 लाख टन लौह अयस्क गायब कर दिया गया है। अंतराष्ट्रीय बाजार में लौह अयस्क की कीमत 145 डॉलर प्रति टन है। अगर सभी तरह के खर्चों को घटाकर सौ डॉलर प्रति टन भी मान लिया, जाये तो करीब 14 अरब रुपये होते हैं।

उत्तर प्रदेश खाद्यान्न

उत्तरप्रदेश में करीब 35 हजार करोड़ रुपये का अनाज दो सौ अफसरों ने मिल कर देश के दूसरे शहरों और विदेशों में बेच दिया। सन् 2001 से 2007 के बीच अंत्योदय योजना, अन्नपूर्णा योजना और मध्यान्ह भोजन के तहत गरीबों को दिया जाने वाला अनाज नेपाल और बांग्लादेश में भी बेचा गया। यह हेराफेरी सात वर्षों तक चलती रही। इसको लेकर उत्तर प्रदेश में करीब पांच हजार प्राथमिकियां दर्ज करायी गई हैं। प्रवर्तन निदेशालय ने इस मामले में आरोपी अफसरों के खिलाफ मनी लांडरिंग एक्ट और फेमा के तहत कार्रवाई शुरू की है। खाद्यान्न घोटाले को हाईकोर्ट में ले जाने वाले

याचिकाकर्ता विश्वनाथ चतुर्वेदी की मानें, तो इस घपले में करीब दो लाख करोड़ रुपये के अनाज की हेराफेरी की गयी है।

निष्कर्ष यह है कि भारत में भ्रष्टाचार चरम पर है यदि इसे रोकने हेतु पहले अभियान चला गया होता और लोकपाल जनलोकपाल विधेयक लागू हो जाता तो शायद स्थिति कुछ अलग होती। 21 वीं सदी का भ्रष्टाचार सिर्फ प्रशासन तक ही सीमित नहीं है यह कारोपोरेट क्षेत्र सेवा क्षेत्र, स्थानीय स्व–शासित निकायों, राजनीतिक, दलों, शिक्षा व्यवस्था निकायों, राजनीतिक दलों, शिक्षा व्यवस्था धार्मिक संस्थानों, मनोरंजन उद्योग, रक्षा के कुछ विभागों, न्यायपालिका, तथा निर्वाचन प्रक्रिया, हर जगह व्याप्त है। सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार का अलग चरित्र और रणनीति है। इसके अलावा भारत और विदेश, दोनों ही जगह मौजूद काला धन बेहिसाब भ्रष्टाचार का स्त्रोत है। इन सभी क्षेत्रों के संबध में अलग–अलग रणनीतियाँ बनाए जाने की आवश्यकता है। ऐसा कोई भी व्यापक आंदोलन नहीं छेड़ा जा सकता जो भारत के संपूर्ण भ्रष्टाचार को अपने अंदर समाहित कर ले। इसके अलावा व्यावहारिक कारणों से भी कोई अखिल भारतीय जन अथवा सामाजिक आंदोलन नहीं खड़ा हो सकता। सबसे बढ़ कर तो यह कि भ्रष्टाचार के खिलाफ अखिल भारतीय आंदोलन नहीं शुरू हो पाने का एक विशिष्ट कारण है। भारत में भ्रष्टाचार के खिलाफ सार्वजनिक बहस लगभग पूरी तरह कानूनी एवं प्रशासनिक उपायों तक सीमित रही है जो कि प्रभावहीन अथवा व्यर्थ साबित हो चुके हैं। इसलिए भ्रष्टाचार के मूल कारण अर्थात् चेतना के भ्रष्टाचार अथवा जनमानस के सामूहिक भ्रष्टाचार को संबोधित किए जाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि सरकारों को भ्रष्टाचार के मूल कारण चेतना के भ्रष्टाचार पर भी विचार किया जाना चाहिए। चेतना के भ्रष्टाचार सिर्फ आर्थिक राजनीतिक और कानूनी क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है यह सामूहिक जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त है–जैसे कि घरेलू हिंसा को घटनाओं पर दृष्टिगत हों तो 65 प्रतिशत भारतीय पुरूष यह मानते हैं कि महिलाओं को परिवार की एकता के लिए हिंसा को बर्दाश्त करना चाहिए और कई बार तो महिलाएं पिटने का काम ही करती हैं। कुछ समय पूर्व हुए एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण से यह बात उजागर हुई है कि 25 प्रतिशत भारतीय पुरुष किसी न किसी बिंदु पर सेक्स हिंसा के दोषी रहे हैं। लगभग 20 प्रतिशत ने वह स्वीकार किया है कि उन्होंने अपनी संगिनी के साथ शारोरिक संबंध कायम करने में जबरदस्ती की है। दूसरे शब्दों में, महिलाओं के खिलाफ घेरलू हिंसा चेतना के भ्रष्टाचार का प्रदर्शन है, उसे स्पष्ट तौर पर सामाजिक बुराई कहा जा सकता है। इसके अलावा नागरिकों के पथभ्रष्ट आचरण से निपटने के लिए बनाए गए कानून और नियम तब अप्रासांगिक हो जाते हैं, जब पथभ्रष्ट आचरण सामान्य व्यवहार बन जाते हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर वर्तमान समय के भ्रष्टाचार की चरम सीमा को देखते हुए यही कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार ऐसी बीमारी की तरह नहीं है जिसके लिए एक निश्चित दवा की गोली का सेवन करने से उसे रोका जाए। भ्रष्टाचारियों के विरुद्ध सशक्त कानून बनने के पश्चात् भी भारत में भ्रष्टाचार पर तब तक अंकुश नहीं लग सकता जब तक तमाम उन स्त्रोंतो का पता न लगाया जाय जिनके कारण भ्रष्टाचार कायम रहता है, तब तक भ्रष्टाचार पर रोक लगाने की बात करना भी एक और भ्रष्टाचार होगा। ऐसी जानकारी के बाद ही प्रत्येक ऐसे स्त्रोतों पर अलग–अलग तरह की रोक लगाने की व्यवस्था कायम करनी पड़ेगी जिसके बाद उन स्त्रोंतों के माध्यम से भ्रष्टाचार कर पाना संभव न हो।

आज भ्रष्टाचार देश के विकास मे बहुत बड़ी बाधा बन चुका है जो पैसा विकास में खच होना चाहिए वह विदेशी बैंक में जमा हो जाता है। 2 जी स्पेक्ट्रम में 2 लाख 76 हजार करोड़ का घोटाला आदि ऐसे नए घोटाले है जिससे देश की छवि धूमिल हुई है। राजनीतिज्ञों एवं प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा जमकर भ्रष्टाचार किया जा रहा है। देखा जाए तो आजादी के इतने वर्षों पश्चात भी भारत के विकास की गति जो होनी चाहिए वो नहीं है आज भी भारत पानी बिजली एवं मंहगाई जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। राजनीति में बदलाव लाए बगैर भ्रष्टाचार को खत्म नहीं किया जा सकता है। 21 वीं सदी के दूसरे दशक के भ्रष्टाचार का दृश्य यह है कि आज किसी भी कार्यालय के चपरासी से लेकर बड़ा अधिकारी तक भ्रष्टाचार की गर्त में डूबा हुआ हैं लोकपाल या जनलोकपाल विधेयक बन जाने से भ्रष्टाचार खत्म हो जाएगा यह सोचना सबसे बड़ी भूल है फिर भी इससे कुछ अंकुश तो लगेगा ही इसमें संदेह नहीं कि भ्रष्टाचार के लिए राजनीतिक दल ही जिम्मेदार है। जिन राजनीतिक दलों के नेताओं को देश के विकास की जिम्मेदारी सौपी गई है वही अपना विकास स्वयं कर रहे हैं –बढ़ती महंगाई दिन प्रतिदिन जिसमें आम जनता पिस रही है वहीं भ्रष्टाचारी नेता नित्य अपने वेतन बढ़ाने व भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने में लगे हुए है। भ्रष्टाचार खत्म करने का एक ही उपाय है, भ्रष्टाचारियों को मृत्युदंड देना पर क्या यह संभव है? आवश्यकता है कुछ कड़े कानून बनाने और जनजागरूकता की जब भारत का प्रत्येक व्यक्ति चाहे वो किसी भी क्षेत्र से जुड़ा हो वह अमीर हो या गरीब जब तक वह अपनी जिम्मेदारी समझते हुए भ्रष्टाचार के खिलाफ नहीं होगा। तब तक इसे रोक पाना संभव नहीं है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई हर कोई दूसरे के आंगन से ही शुरू करना चाहता है और वहीं पर समाप्त कर देने की सोचता है। आवश्यकता इस बात की है प्रत्येक नवयुवक प्रण ले और अपने माता–पिता को भ्रष्टाचार न करने की नसीहत दे। भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई प्रत्येक व्यक्ति को सबसे पहले अपने घर में लड़नी चाहिए, यह तभी संभव है जब भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए सभी, एकजुट तरीके से आगे आऐं और भारतीय जनमानस में एकजुटता जिस दिन हुई तब अवश्य ही सोने की चिड़िया के नाम से पहचाना जाने वाला यह भारत भ्रष्टाचार से मुक्त एक ऐसा भारत होगा जिसके विकास की गति दुनिया के अन्य देशों के विकास की गति से चार गुना बढ़ जाएगी तब यह विश्वपटल पर प्रथम महाशक्तिशाली भारत के रूप में पहचाना जाएगा।

सदंर्भ सूची

1. अपराध और भ्रष्टाचार की राजनीति निर्मल कुमार सिंह वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली पृष्ठ 75
2. (विनीत नारायण) हवाला के देशद्रोही, अरूणोदय, प्रकाशन मानसरोवर पार्क शाहदरा दिल्ली, पृष्ठ 26, 30
3. प्रथम प्रवक्ता 15 जून एवं 30 जून 2011 का अंक पृष्ठ 15, 25 संपादक नरेन्द्र एन. ओझा नोएडा उत्तरप्रदेश
4. पाखी मासिक पत्रिका जून 2011 बी–107 सेक्टर 63 नोएडा गौतम बुद्ध नगर, उत्तरप्रदेश पृष्ठ,11, 15
5. प्रथम प्रवक्ता मई 2011 समाचार विचार पत्रिका संपादक नरेन्द्र एन. ओझा ए–26 नोएडा उत्तरप्रदेश पृष्ठ 45
6. द सडे इंडियन 18 अप्रैल 2011 मासिक पत्रिका 01–05 पृष्ठ 18
7. प्रथम प्रवक्ता 16–30 अप्रैल 2011 नोएडा उत्तरप्रदेश पृष्ठ 5
8. द पब्लिक 27 अप्रैल 2011 वर्ष 04 अंक 06 वैदेही काम्पेक्स, हरमू हाउसिंग कालोनी रांची झारखंड पृष्ठ, 28,44
9. नयातारा हिन्दी मासिक पत्रिका अप्रैल 2011 संपादक–भारती, प्रोफेसर कालोनी भोपाल, पृष्ठ 2
10. स्वयं का सर्वेक्षण व निष्कर्ष।